ग्रंथमाला 'धर्माचरण' : खंड १

सोलह संस्कार

भूमिका

धर्म सिखाता है कि मनुष्यजन्म ईश्वरप्राप्तिके लिए है; इसलिए जन्मसे लेकर मृत्युतक प्रत्येक प्रसंगमें ईश्वरके निकट पहुंचनेके लिए आवश्यक उपासना कैसे की जाए, इसका मार्गदर्शन धर्मशास्त्रमें किया गया है । जन्मसे लेकर विवाहतक जीवनका एक चक्र पूर्ण होता है । उसी प्रकारका चक्र पुत्रके / कन्याके जन्मसे उसके विवाहतक चलता है । पीढी-दर-पीढी ऐसा चलता रहता है । गर्भधारणसे विवाहतकके कालमें जीवनके प्रमुख सोलह प्रसंगोंमें, ईश्वरके निकट पहुंचने हेतु कौनसे संस्कार करने चाहिए, इसका ज्ञान इस ग्रंथमें दिया गया है । इन संस्कारोंके कारण आगे चलकर उपासना उत्तम होने लगती है । संस्कार कैसे करें, इसकी जानकारी ग्रंथके अंतमें उल्लेखित संदर्भग्रंथोंसे ली गई है । संस्कारोंके अंतर्गत आनेवाली प्रत्येक विधि कैसे करनी चाहिए, इसका विस्तृत विवेचन करनेकी अपेक्षा अमुक विधि अमुक पद्धतिसे क्यों करनी चाहिए, इसकी मूल अध्यात्मशास्त्रीय कारणमीमांसा प्रस्तुत करनेपर बल दिया है । इससे संस्कारोंका मूल शास्त्र समझनेमें सहायता होगी । वर्ण, जाति, उपजाति इत्यादि संस्कारोंकी विधियोंमें कुछ मात्रामें पाठभेद होगा; परंतु उससे विधिका मूल शास्त्र समझनेमें कोई कठिनाई नहीं होगी । कुछ लोग मृत्युके उपरांतके संस्कारोंकी भी सोलह संस्कारोंमें ही गणना करते हैं । उन संस्कारोंकी जानकारी 'मृत्यु एवं मृत्युपरांतके क्रियाकर्म' नामक लघुग्रंथमें दी गई है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि आजके बुद्धिप्रधान कालमें भी संस्कार एवं अन्य विधियोंके मूल शास्त्रको जानकर, उसके अनुसार आचरण कर, ईश्वरके अधिकाधिक निकट जानेका प्रयत्न सभी करें । **- संकलनकर्ता**

('अध्यात्मशास्त्र' ग्रंथमालाके सभी खंडोंकी संयुक्त भूमिका 'धर्मका मूलभूत विवेचन'के अंतर्गत दी है ।)

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।]

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ १४

१ अ. नैमित्तिक कर्म, संस्कार, उत्सव एवं त्योहार १४

२. महत्त्व १५

३. अधिकार (संस्कार किसका किया जाता है ?) १८

४. पद्धति १९

५. आधारविधि २१

६. संस्कार २९

६. १. गर्भाधान (ऋतुशांति) २९

६. २. पुंसवन (पुत्रप्राप्ति) ३३

६. ३. सीमंतोन्नयन ३५

६. ४. जातकर्म (जन्मविधि) ३६

६. ५. नामकरण ३८

६. ६. निष्क्रमण (घरके बाहर ले जाना) ४५

६. ७. अन्नप्राशन ४६

६. ८. चौलकर्म (चूडाकर्म, चोटी रखना) ४७

६. ९. उपनयन (व्रतबंध, यज्ञोपवीत संस्कार) ४८

६. १०. मेधाजनन ६१

६. ११. महानाम्नीव्रत ६२

६. १२. महाव्रत ६२

६. १३. उपनिषद्व्रत ६२

६. १४. गोदानव्रत (केशांतसंस्कार) ६२

६. १५. समावर्तन ६३

६. १६. विवाह ६५

* अर्थ एवं समानार्थी शब्द ६५
* उद्देश्य एवं महत्त्व ६६
* विवाह निश्चित करना ६७
* वाग्दान (वाङ्निश्चय) ६८
* मुहूर्तनिश्चय एवं समधिभोजन ६९
* गौरीहरपूजन ७०
* अंतःपटधारणविधि ७०
* कन्यादानविधि ७४
* मंगलसूत्रबंधन ७५
* लाजाहोम ७६
* अश्मारोहण (वधूका सिलपर खडे रहना) ७६
* सप्तपदी मंत्र ७७
* विवाहोत्तर विधियां ७९
* विवाहसंस्कारसे वर-वधूका एक-दूसरेसे एकरूप होना ८०
* विवाहसंस्कारके उद्देश्यको धूलमें मिलानेवाले प्रशासन एवं न्याय-संस्थाके निर्णय तथा उससे प्रोत्साहित होनेवाली अनैतिकतासे परिवार-संस्थाके नष्ट होनेका भय ! ८०
* सज्जनो, विवाहबाह्य संबंधोंका विकृतिका विरोध करें ! ८१

卐 कुछ आनुषंगिक सूत्र ८४

卐 'विवाहसंस्कार'संबंधी आलोचना एवं अनुचित विचारोंका खंडन ८८

जपजाप, व्रत-त्योहार, कर्मकांड... केवल इतना ही नहीं है अध्यात्म !
अध्यात्मका व्यापक दृष्टिकोण देनेवाला सनातनका ग्रंथ

अध्यात्मका प्रस्तावनात्मक विवेचन

दुःखदायी समस्याओंपर मात कर, जीवनको आनंदमय
बनाने हेतु चरण-दर-चरण साधना कैसे करें, इसका पथप्रदर्शन !